सिंहासन के इधर-उधर

राजबहादुर 'विकल'

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

सिंहासन के इधर-उधर

राजबहादुर 'विकल'

नमूना • SAMPLE

सम्पादक
डॉ0 प्रशान्त अग्निहोत्री

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

सिंहासन के इधर-उधर
राजबहादुर 'विकल'

आईएसबीएन : 978-81-19098-87-3
सर्वाधिकार : © सम्पादक
संस्करण : प्रथम, 2025, अगस्त 1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY



जन्म - 02 जुलाई, 1926
अवसान - 15 अक्टूबर, 2009

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अनुक्रम

	राजबहादुर 'विकल' (पूनम से अमावस तक)	*ix*
	पुरोवाक्	*xiii*
	भावनांजलि...	*xv*
	दो शब्द मेरे भी...	*xvii*
1.	सरस्वती वन्दना	1
2.	धन बोल उठा	5
3.	प्रज्ञा की भगवा किरणों से तम दूर हुआ	19
4.	जल उठी आग	22
5.	कालजयी सन्त विनोबा	28
6.	हस्ताक्षर	33
7.	सागर का धीरज छूट गया	38
8.	अमरत्व के वरदायी : तुलसीदास	42
9.	बलिदानी वीरों के प्रति	45
10.	हे! मातृभूमि	47
11.	मैं सिंहासन हूँ	51
12.	भेजा गया मैं	57
13.	मेरे कवि युग के गान लिखो	59
14.	अशफाक के प्रति	61
15.	पीले पल्लव	62

SAMPLE

16. गोविन्द सिंह के प्रति 64
17. पंच प्यारा 67
18. खालसा पंथ 68
19. नया वर्ष 70
20. यह तो जयकेतु विधाता का 73
21. तुलसीदास के प्रति 75
22. सपने 79
23. आप समझे हुए 80
24. परशुराम 81
25. हे! लौह पुरुष तुमको प्रणाम 82
26. विवेकानन्द 83
27. किन्तु तुम मौन रहे 85
28. नन्हें-नन्हें सपने 86
29. सिंहासन के इधर-उधर 87
30. युवा कवियों से 88
31. गीत 91
32. गीत 93
33. गीत 94
34. गीत 95
35. गीत 96
36. गीत 98
37. मुक्तक 99

SAMPLE

राजबहादुर 'विकल'
(पूनम से अमावस तक)

02 जुलाई 1926 को श्री सुन्दर लाल सक्सेना जी एवं श्रीमती सरस्वती देवी को पुत्र रत्न प्राप्त हुआ, जिसे हम सब लोग श्री राजबहादुर 'विकल' के नाम से जानते हैं। आपका जन्म शाहजहाँपुर जिले के एक छोटे से गाँव छीतेपुर में हुआ था। भरा पूरा घर, पिता जी आर्यसमाजी, जिनके मंत्रोच्चार की ध्वनि दिशाओं में प्रवाहित होती रहती थी। 11 वर्ष की आयु में ऐसे पिता का स्वर्गवास हो गया। एक वर्ष बाद ही माता जी को भी उसी स्थान पर जहाँ पर पिता जी की चिता जली थी, निस्यंद शरीर प्राप्त हुआ।

वर्षा ऋतु में मकान गिर गया एवं तीन भाइयों की भी मृत्यु हो गई। इस संसार में अब श्री राजबहादुर अकेले रह गए, अपना कहने वाला कोई नहीं। अतः गाँव छोड़कर शाहजहाँपुर शहर में आ गए और किसी प्रकार जीवनयापन करने लगे। शिक्षा के प्रति लगाव से येनकेन प्रकारेण हाई स्कूल की परीक्षा पास की। जीवनयापन के लिए अखबार का वितरण तथा स्थानीय आर्डनेन्स डिपो में कार्य किया। द्वितीय विश्व युद्ध का समय था, देश में स्वतंत्रता के प्रति दीवानगी थी। शाहजहाँपुर नगर अपने शहीदी स्वभाव के कारण भी चर्चा में रहा था। 'काकोरी कांड' के कई नायकों का संबंध शाहजहाँपुर से भी रहा है। इन सब बातों का असर भी श्री राजबहादुर 'विकल' के युवा मन पर पड़ा और उनके मन में भी देश-प्रेम की तरंगें हिलोर लेने लगीं, कविता के रूप में उन्होंने पूरे नगर में अपनी वाणी द्वारा देश प्रेम की अलख जगाई। इसी कविता ने ही नगरवासियों को झंकृत किया और इस युवक के प्रति प्यार एवं श्रद्धा पैदा की।

सन् 1947 में देश आजाद हो गया। नई बयार चलने लगी। विकल जी का विवाह भी हो गया था, नव निर्माण का समय था, कवि सम्मेलनों की

SAMPLE

धूम थी, कुछ करने का जज्बा युवकों के मन में जोर से हिलोरें ले रहा था। श्री विकल जी ने अनेक युवकों को कविता की ओर आकर्षित किया। आप जहाँ कहीं गए, युवकों के मन में कविता का बीज बोया।

सन् 1948 में चौक में गांधी पुस्तकालय की स्थापना हुई, श्री विकल जी ने इस पुस्तकालय की देख-रेख का जिम्मा अपने ऊपर लिया। व्यक्तिगत स्तर पर आपने इण्टरमीडिएट, बी.ए., एम.ए. की परीक्षा पास की, फिर संस्कृत में भी एम.ए. किया। उर्दू की 'आलिम-फाजिल' की डिग्री भी प्राप्त की। साथ ही साथ अपनी पत्नी श्रीमती धर्म देवी की शिक्षा पर भी ध्यान दिया और उन्हें एम.ए. करवाया। इसी बीच आपका सम्पर्क श्री प्रेम किशन खन्ना (काकोरी कांड में शामिल रहे, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) से हुआ, जिनके प्रयासों से 'काकोरी शहीद इण्टर कॉलेज' में अध्यापक के रूप में नियुक्त हुये।

आप जलालाबाद चले गए। जलालाबाद में आपने कविता की अलख जगा दी। अनेक शिष्य बनाए और कई कवि सम्मेलन करवाए। जिसमें देश के दिग्गज कवियों को बुलाया। शिक्षा के क्षेत्र में कन्याओं के लिए आचार्य पुरुषोत्तम दास टंडन के नाम पर पुरुषोत्तम आदर्श कन्या स्कूल की स्थापना की, जो अब इंटर कॉलेज है।

श्री राजबहादुर 'विकल' अकेले ऐसे कवि थे, जिन्होंने अपनी पुरानी पीढ़ी के कवियों को प्रभावित किया। श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', श्रीशंकर जी, पं. वंशीधर शुक्ल (अवधी के राष्ट्रकवि), श्री सुमित्रानन्दन पंत, श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन', श्री गोपाल दास 'नीरज', श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री बलवीर सिंह 'रंग', श्री क्षेमपाल सिंह 'सुमन', श्रीमती स्नेह लता 'स्नेह', श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना, श्री श्याम नारायण पाण्डे, लवकुश दीक्षित आदि अनेक कवियों से आपकी घनिष्ठता रही।

आपका घर कवियों के लिए अपना घर था। ऐसा कोई भी समय नहीं था, जब आपके गृह में कोई कवि न आ ठहरता हो। कविता की अविरल धारा सदैव बहती रही है।

'दादा', प्रेम की इस उपाधि को शाहजहाँपुर नगर के साहित्यकारों ने उन्हें कब प्रदान किया, इसका पता नहीं चलता। दादा विकल जी 'भारतीय साहित्य कला परिषद' के अध्यक्ष एवं 'अखिल भारत साहित्यकार सभा' के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे।

'हर मुश्किल को हँसी में उड़ाता चला गया' दादा विकल की खूबी थी। उन्होंने अपनी परेशानियों की कभी कोई चर्चा नहीं। सहज रहना और जी खोलकर हँसना आपका स्वभाव था।

सरस्वती 'दादा विकल' जी को सिद्ध थी। आनन्द और उल्लास उनके अनुचर। शब्द हाथ बाँधे उनकी कविता में स्थान पाने हेतु खड़े दिखाई पड़ते हैं। उनकी प्रकांड विद्वता, स्वभाव का फक्कड़पन, बालवत् निर्मलता दादा विकल जी को संत बना देती है।

उनका लिखा हुआ बोरों में भरा हुआ रखा रहता था। 'यशोधरा' 'मीराबाई' आदि काव्य, फुटकर गीत, सहस्त्रों मुक्तक और कविताओं की अन्तहीन लिस्ट। आपकी चार पुस्तकें प्रकाशिक प्राप्त हैं।

1. कालजयी सन्त बिनोवा, 2. मृत्युंजय महापुरुष, 3. भारत और रूस
4. शहीदों का लहू

दादा विकल जी ने सामाजिक अन्याय तथा आर्थिक शोषण का सदैव विरोध किया और जुल्म के खिलाफ आवाज उठाई। सक्रिय भूमिका में भी रहे, चाहे इसके लिए जेल भी जाना पड़े।

आपने अपनी मिट्टी का मूल्यांकन अपनी कविताओं में कर, भारत माँ के गौरव गीत गुंजायमान किए। पीड़ित मानवता की सेवा में अपना जीवन लगाया। वे श्वेत वस्त्रों में एक सन्यासी, महात्मा की भाँति रहे।

कवि सम्मेलन के मंचों पर डेढ़ घण्टे खड़े होकर काव्य पाठ करना और वह भी गर्जना के स्वर में, लाखों लोगों को बाँधे रहना, यह तो वही समझ सकते हैं, जिन्होंने उन्हें ऐसा करते देखा है। शीत ऋतु में भी पसीने-पसीने हो जाना, दादा के काव्य-पाठ का परिणाम था।

आपके शिष्यों की संख्या असंख्य है। जो भी मिला उसे अपना बना लिया। अधिकतर पत्रों में 'तुम्हारा सगा भाई' से पत्र समाप्त करते थे। इसका असर अनेक लोगों पर हुआ।

कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से विकल जी की कविता महत्वपूर्ण है। कविता 'पूरा कश्मीर हमारा है' में दादा का शिल्प दृष्टव्य है-

किसकी अलका में आग लगी
किसके संचित आनन्द जले।।
यह अपना स्वर्ग जला जाता।
यह मेघदूत के छन्द जले।।

कवि उरफी कहता स्वर्ग यहीं, चलकर रज-तन में झलकाएँ,
जलती चिड़िया दो डाल यहाँ, तो उसके पंख निकल आएँ।

'कविता के राम तुलसीदास' में पर दादा की पंक्तियाँ भी दृष्टव्य हैं -

तुलसी पौरुष के निर्माता, वह महाशक्ति के दाता थे।
तुलसी केवल कवि नहीं, विश्व में भारत भाग्य विधाता थे।।

महामृत्युजंय महात्मा गांधी पर वे लिखते हैं-

झोपड़ियों गांवों में खोजो, मन का शतदल खिल जाएगा।
नंगे भूखों की बस्ती में, तुमको गांधी मिल जाएगा।।

उनका काव्य वाचन में स्वाभाविक ओज, श्रोताओं में ऊर्जा भर देता था। अद्‌भुत काव्य वाचन और श्रोताओं को सम्मोहित करने की उनकी क्षमता अद्‌भुत थी।

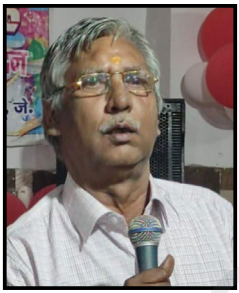
प्रस्तुत पुस्तक दादा विकल जी के अत्यन्त प्रिय कवि डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री जी के प्रयास का सुपरिणाम है।

दादा जी की कथा भी 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता है' कहीं से कहो, कितनी भी कहो। बहुत कुछ कहने को शेष रह जाएगा।

और अंत में-

पीर की गहराइयों से भी, कमल रुकता नहीं
क्या फकीरी, मौत से भी, प्राण यह डरता नहीं।।
कहाँ मिट्‌टी में दबे हैं, सर तुम्हारे बोलते हैं।
स्वर तुम्हारे बोलते हैं।।

ओम प्रकाश 'अडिग'



पुरोवाक्

दिनकर कालीन कवियों की श्रृंखला के दादा राजबहादुर 'विकल' ने स्वयं कविता का एक युग जिया। आजादी के संघर्ष से लेकर आपातकाल के संघर्ष तक और आपातकाल के संघर्ष से भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष तक का सफर उन्होंने किया और लम्बे सफर का यही अनुभव उनकी कविताओं में फूटता भी है। वास्तव में उन्होंने उद्दाम जिजिविषा के साथ कविता को जी कर दिखाया इसीलिये वे 'विकल' थे। उनकी कविताओं में देश के आम आदमी का, पीड़ित और शोषित का दर्द तथा उससे उपजा क्रोध उतरता है। इसीलिए वे 'विकल' थे। कविता उनके लिये विलास या वाग्जाल नहीं थी बल्कि एक आन्दोलन थी इसीलिये वे विकल थे।

कविता का आन्दोलन वे सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों तक ले गये। इसके लिये उन्होंने 'चलो कवि वन फूलों की ओर' नाम से अभियान भी चलाया और इसके तहत जनपद के दर्जनों गांवों में नामचीन कवियों को बुलाकर कवि सम्मेलन आयोजित करवाये।

उन्हीं वीर रस के पुरोधा दादा राजबहादुर 'विकल' का प्रकाशित काव्य संग्रह 'सिंहासन के इधर-उधर' आपके हाथों में है। इसमें दादा विकल के काव्य पक्षों के सभी स्वरूपों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह कोशिश भी की गयी है कि उनकी प्रतिनिधि कविताओं को

संग्रहित किया जाये। अपने जीवन काल में दादा विकल ने सैकड़ों काव्य संग्रहों, खण्ड काव्यों, महाकाव्यों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, व स्मारिकाओं का विमोचन किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में वे अक्सर कहा करते थे यदि वे छपे नहीं हैं तो छुपे भी नहीं हैं। दरअसल प्रकाशन को लेकर यह उनकी पीड़ा थी, उनका दर्द था जो भौतिक युग में हर सम्वेदनशील कवि के हृदय में अक्सर फूटता है।

यद्यपि बहुत पहले 'भारत व रूस' नाम से उनका काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका था। बाद में गांधी व बिनोवा पर भी काव्य पुस्तकें आयीं। उनकी अन्तिम पुस्तक 'शहीदों का लहू' थी। फिर भी प्रकाशन के मामले में उनके मन में जो एक फाँस थी, जिसे वे प्रयत्न करके भी निकाल नहीं पा रहे थे। एक कसक थी जो टीस बनकर जब-तब उठती थी। एक लम्हा था जो न मारे मरता था, न वक्त के साथ गुजरता था। जिन्दगी के अन्तिम माहों में उन्होंने एक पाण्डुलिपि भी तैयार की थी लेकिन उनके बाद उस पाण्डुलिपि का क्या हुआ 'यह रहस्य' उनके साथ ही चला गया।

दादा विकल 'प्रवाह' के संस्थापक संरक्षक थे। उनकी अध्यक्षता में संस्था द्वारा सौ से अधिक काव्य गोष्ठियाँ आयोजित की गयीं। इसके चलते जब 'प्रवाह' ने अपने परिवार के कवियों की पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बनायी तो सबसे पहले दादा विकल की ही पुस्तक प्रकाशित करने पर एकराय कायम हुयी। प्रकाशन का भार सर्वसम्मति से संस्था के सचिव डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री को सौंपा गया। इस कार्य को अपनी पूर्णाहुति तक पहुँचाने के लिए जिन आर्थिक सहभागिताओं की आवश्यकता थी उसे पुरुषोत्तम आदर्श कन्या इण्टर कालेज, जलालाबाद की प्रबन्ध समिति ने सहर्ष पूरा किया। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ. के.डी. सिंह, उपाध्यक्ष कमलेश सक्सेना, सचिव मो. इरफान, उपसचिव सुश्री साधना शर्मा, डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री, संजीव गुप्त, ब्रजेश सक्सेना और डॉ फरमान का अप्रतिम सहयोग मिला। उनके सतत् प्रयत्नों से प्रकाश में आया दादा विकल का यह काव्य संग्रह आपको सौंपते हुये प्रवाह परिवार अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

सुशील दीक्षित 'विचित्र'



भावनांजलि...

दिनकर कुल के दैदीप्यमान नक्षत्र दादा राजबहादुर 'विकल' ओज की कविता का वह विराट व्यक्तित्व थे जो इस धरा पर युगों-युगों में कभी जन्म लेते हैं। एक ओजस्वी कवि के रूप में मंच पर गर्जना करते दादा विकल में एक शिशु सी सहजता थी। जलालाबाद के काकोरी शहीद इण्टर कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक के रूप में उन्होंने अपने छात्रों का विशेष स्नेह पाया। अपनी इसी शैक्षिक मार्गदर्शक की भूमिका में उन्होंने समाज में बेटियों को सुशिक्षित बनाने के उद्देश्य से पुरुषोत्तम आदर्श कन्या इण्टर कॉलेज की स्थापना की। जनपद के कार्यक्रमों में मंच पर उनकी अध्यक्षता का आसन स्थायी था। कोई भी मंच हो कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में दादा विकल की प्रभावपूर्ण और गरिमामयी उपस्थिति रहती थी। उन जैसा हाजिर जबाव और हास-परिहास से परिपूर्ण व्यक्ति बिरला ही होता है। किसी भी बोझिल स्थिति में उनका सहज परिहास सारे वातावरण को हंसी की खिलखिलाहट से भर देता था। दादा विकल की कविताओं के विकास का विस्तार परतंत्र भारत से लेकर स्वतंत्र भारत तक प्राप्त होता है। आजादी के आंदोलन के दौरान देश-प्रेम से प्रेरित होकर कविता का जो स्वर उनमें जागा, वह सारे जीवन शोषण, भ्रष्टाचार और दोगली शासन नीतियों के विरुद्ध गरजता रहा।

SAMPLE

आम आदमी की पक्षधरता और उनके स्वयं के जीवन का एकाकीपन उनकी कविताओं में दिखाई देता है।

उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया, पर समय के क्रूर प्रहारों और उपेक्षा से, इसमें से अधिकांश नष्ट हो गया। उनके बिखरे हुए साहित्य के कुछ मूल पृष्ठ, उनके साहित्य की खोज के दौरान प्राप्त हुए उन्हीं को पुस्तक के रूप में आप सबके कर कमलों में सौंप रहा हूँ। ये उनके उस स्नेह से उऋण होने का एक लघु प्रयास मात्र है। दादा विकल का मुझ पर अजस्र स्नेह था। उन्होंने सदैव मुझे अपने पुत्र के समान स्नेह दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणें में मेरा हाथ पकड़कर उनके द्वारा बालिका शिक्षा के लिये स्थापित विद्यालय की बागडोर सौंपते हुए कहा था कि, "इस धरोहर को कभी धूमिल न होने देना।" उनके गोलोक गमन के बाद आज भी उनके यह वाक्य मेरे कानों में गूंजते रहते हैं। मैं हमेशा इसी प्रयास में रहता हूँ कि मैं उनकी हर धरोहर को संरक्षित और विराट बना सकूं।

उनके लिये कुछ भी लिखना सूरज को दीपक दिखाने के समान है और उनका साहित्य हमेशा लोकमानस में जीवित रहेगा।

मो. इरफान
प्रबन्धक
पुरुषोत्तम आदर्श कन्या इण्टर कॉलेज
जलालाबाद, शाहजहाँपुर